DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
SRAP College, Barachakia

B.A. (Hons.) Part — III
Sub. — SANSKRIT
Paper — VII
Short Notes

5×4 = 20 Marks
Dated - 09.07.2020

अलङ्कारों के सोदाहरण लक्षण—

3. उत्प्रेक्षा अलङ्कार

उत्प्रेक्षा अर्थगत अलङ्कारों में सुप्रसिद्ध है। आलङ्कारिकों ने इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की है— "उत्कया प्रकृतस्योपमानस्य ईक्षा ज्ञानम् उत्प्रेक्षा (उत + प्र + ईक्षा)"। भाव यह है कि उत्प्रेक्षा में प्रस्तुत या उपमेय में अप्रस्तुत या उपमान का उत्कटता से ज्ञान हो। कुछ आचार्यों ने उत्प्रेक्षा को — "उत्कटैककोटिकः संशयः" भी कहा है। ~~[illegible]~~ मम्मट ने उत्प्रेक्षा की परिभाषा देते हुए लिखा है— "सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।" अर्थात् प्रकृत (उपमेय) की सम (उपमान) के साथ सम्भावना को उत्प्रेक्षा अलङ्कार कहते हैं।

विषय के अनुपपादन की स्थिति तथा उपपादन होने पर अध:करण के कारण प्रस्तुत अलंकार के दो उदाहरण दिये जाते हैं। प्रथम उदाहरण—

"लिम्पतीव तमोऽङ्गानि ~~[illegible]~~ वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता॥" (मृच्छकटिक 1/34)

यहाँ अंधकार का प्रसरण तथा सम्पात रूप विषय अर्थात् उपमेय का उपपादन नहीं किया गया है। इन दोनों की अप्रस्तुत अङ्गलेपन और 'अञ्जनवर्षण' से सम्भावना की गयी है।

द्वितीय उदाहरण —

"समयः स वर्तत इवैष यत्र मां समनन्दयत् सुमुखि! गौतमार्पितः।
अयमागृहीतकमनीयकङ्कणस्तव मूर्तिमानिव महोत्सवः करः॥"
(उत्तररामचरित 1/1?)

यहाँ विषय उपमेय राम का नाम तो लिया गया है, किन्तु, मूर्तिमान महोत्सव के साथ उसका अधःकरण कर दिया गया है। मन्ये, शंके, ध्रुवं, प्रायः, नूनम, इति एवं आदि शब्दों से उत्प्रेक्षा की अभिव्यक्ति होती है। इसी प्रकार 'इव' शब्द भी उत्प्रेक्षा सूचक है।

———— o ————